जायद मक्का फसल का करें प्रबंधन

डीटीएनएन

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्र ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा है कि जायद की फसलों में मक्का का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में जायद मक्का का क्षेत्रफल लगभग 45000 हेक्टेयर है एवं कानपुर मंडल में मक्का का क्षेत्रफल लगभग 7500 हेक्टेयर है। डॉक्टर मिश्रा ने कहा कि अधिकतर किसान भाई जायद मक्का की बुवाई भुट्टे के लिए करते हैं जिसे बाजार में बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त करते हैं।उन्होंने कहा है कि जायद मक्का का प्रबंधन यदि अच्छी प्रकार किया जाए तो एक हेक्टेयर क्षेत्रफल से लगभग 60 से 70 कुंतल दाना तथा 220 से 230 कुंतल हरा भुट्टा प्राप्त किया जा सकता है। तथा इतना ही हरा चारा पशुओं के लिए मिल जाता है। जिससे गर्मियों में हरा चारा की कमी को पूरा किया जा सकता है ।फसल प्रबंधन के क्रम में उन्होंने बताया कि मक्का की बुवाई के 15 से 20 दिनों के बाद पहली सिंचाई अवश्य कर दें। तत्पश्चात अगली सिंचाई आवश्यकता अनुसार 10 से 15 दिन के अंतराल पर करते रहें। जायद मक्का में खरपतवारो के नियंत्रण के लिए खुरपी की सहायता से निराई कर दें।जिससे खरपतवार प्रबंधन हो जाता है तथा मिट्टी में स्वसन क्रिया बढ़ने से पौधे स्वस्थ हो जाते हैं उन्होंने यह भी कहा कि उर्वरक प्रबंधन के लिए खड़ी फसल में यूरिया का छिड़काव 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से पहली सिंचाई के बाद ओट आने के बाद सायं कॉल करें। फसल सुरक्षा के लिए यदि मक्का में तना छेदक /शिरा बेधक कीट लगा हुआ है तो इसके नियंत्रण के लिए 25 ई.सी. 1 लीटर डाईमैथओट या क्योंनालफास् 25 ई.सी. डेढ़ लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 400 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें यदि यह दवा बाजार में उपलब्ध न हो तो कार्बोफयूरान 3त्न की 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव कर दें ।पत्तियों या पौधों पर किसी प्रकार का कोई रोग दिखाई पड़े तो जीनेव या मैनकोज़ेब 75त्न 2 किलोग्राम 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव कर दें। कीट या रोग फसल में पुनः दिखने पर 15 दिन के बाद छिड़काव कर दें। डॉक्टर मनोज मिश्रा ने कहा कि मक्का की फसल में जीरा या भुट्टा बनते समय मृदा में नमी का ध्यान जरूर रखा जाए उन्होंने कहा कि आमदनी बढ़ाने के लिए मक्का की दो लाइनों के बीच में लोबिया की बुवाई कर दें जिससे कीट पतंगों का प्रकोप कम होता है। तथा किसान भाइयों को अतिरिक्त आमदनी प्राप्त हो जाती है इसके अतिरिक्त उन्होंने कहा कि किसान भाई इन सब बातों का ध्यान रखकर मक्का का प्रबंधन करते हैं तो अच्छी आय प्राप्त होगी। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि कृषि कार्य करते समय कोविड-19 को दृष्टिगत सावधानी अवश्य रखें।

WORLD खबर EXPRESS

WORLD
खबर एक्सप्रेस

रविवार 23 अप्रैल, 2023 | अंक - 358

www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

www.twitter.com/worldkhabarexpress www.facebook.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress MID DA

जायद मक्का फसल का करें प्रबंधन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. बिजेंद्र सिंह के जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्र ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा है कि जायद की फसलों में मक्का का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में जायद मक्का का क्षेत्रफल लगभग 45000 हेक्टेयर है एवं कानपुर मंडल में मक्का का क्षेत्रफल लगभग 7500 हेक्टेयर है। डॉक्टर मिश्रा ने कहा कि अधिकतर किसान भाई जायद मक्का की बुवाई भुट्टो के लिए करते हैं जिसे बाजार में बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त करते हैं। उन्होंने कहा है कि जायद मक्का का प्रबंधन यदि अच्छी प्रकार किया जाए तो एक हेक्टेयर क्षेत्रफल से लगभग 60 से 70 कुंतल दाना तथा 220 से 230 कुंतल हरा भुट्टा प्राप्त किया जा सकता है। तथा इतना ही हरा चारा पशुओं के लिए मिल जाता है। जिससे गर्मियों में हरा चारा की कमी को पूरा किया जा सकता है । फसल प्रबंधन के क्रम में उन्होंने बताया कि मक्का की बुवाई के 15 से 20 दिनों के बाद पहली सिंचाई अवश्य कर दें। तत्पश्चात अगली सिंचाई आवश्यकता अनुसार 10 से 15 दिन के अंतराल पर करते रहें। जायद मक्का में खरपतवारो के नियंत्रण के लिए खुरपी की सहायता से निराई कर दें।जिससे खरपतवार प्रबंधन हो जाता है तथा मिट्टी में स्वसन क्रिया बढ़ने से पौधे स्वस्थ हो जाते हैं उन्होंने यह भी कहा कि उर्वरक प्रबंधन के लिए खड़ी फसल में यूरिया का छिड़काव 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से पहली सिंचाई के बाद ओट आने के बाद सायं कॉल करें। फसल सुरक्षा के लिए यदि

मक्का में तना छेदक /शिरा बेधक कीट लगा हुआ है तो इसके नियंत्रण के लिए 25 ई.सी. 1 लीटर डाईमैथओट या क्योंनालफास् 25 ई.सी. डेढ़ लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 400 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें यदि यह दवा बाजार में उपलब्ध न हो तो कार्बोफयूरान 3 प्रतिशत की 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव कर दें । पत्तियों या पौधों पर किसी प्रकार का कोई रोग दिखाई पड़े तो जीनेव या मैनकोज़ेब 75 प्रतिशत 2 किलोग्राम 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव कर दें। कीट या रोग फसल में पुनः दिखने पर 15 दिन के बाद छिड़काव कर दें। डॉक्टर मनोज मिश्रा ने कहा कि मक्का की फसल में जीरा या भुट्टा बनते समय मृदा में नमी का ध्यान जरूर रखा जाए उन्होंने कहा कि आमदनी बढ़ाने के लिए मक्का की दो लाइनों के बीच में लोबिया की बुवाई कर दें जिससे कीट पतंगों का प्रकोप कम होता है। तथा किसान भाइयों को अतिरिक्त आमदनी प्राप्त हो जाती है इसके अतिरिक्त उन्होंने कहा कि किसान भाई इन सब बातों का ध्यान रखकर मक्का का प्रबंधन करते हैं तो अच्छी आय प्राप्त होगी। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि कृषि कार्य करते समय कोविड-19 को दृष्टिगत सावधानी अवश्य रखें।

वर्ष-17 अंक-110 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, सोमवार 24 अप्रैल 2023

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात में प्रसारित

दैनिक
नगर छाया
आप की आवाज़.....

RNI N.UPHIN/2007/27090

जायद मक्का फसल का करें प्रबंधन

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ.बिजेंद्र सिंह के जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्र ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा है कि जायद की फसलों में मक्का का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में जायद मक्का का क्षेत्रफल लगभग 45000 हेक्टेयर है एवं कानपुर मंडल में मक्का का क्षेत्रफल लगभग 7500 हेक्टेयर है। डॉक्टर मिश्रा ने कहा कि अधिकतर किसान भाई जायद मक्का की बुवाई भुट्टे के लिए करते हैं जिसे बाजार में बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त करते हैं।उन्होंने कहा है कि जायद मक्का का प्रबंधन यदि अच्छी प्रकार किया जाए तो एक हेक्टेयर क्षेत्रफल से लगभग 60 से 70 कुंतल दाना तथा 220 से 230 कुंतल हरा भुट्टा प्राप्त किया जा सकता है। तथा इतना ही हरा चारा पशुओं के लिए मिल जाता है। जिससे गर्मियों में हरा चारा की कमी को पूरा किया जा सकता है ।फसल प्रबंधन के क्रम में उन्होंने बताया कि मक्का की बुवाई के 15 से 20 दिनों के बाद पहली सिंचाई अवश्य कर दें। तत्पश्चात अगली सिंचाई आवश्यकता अनुसार 10 से 15 दिन के अंतराल पर करते रहें। जायद मक्का में खरपतवारो के नियंत्रण के लिए खुरपी की सहायता से निराई कर दें।जिससे खरपतवार प्रबंधन हो जाता है तथा मिट्टी में स्वसन क्रिया बढ़ने से पौधे स्वस्थ हो जाते हैं उन्होंने यह भी कहा कि उर्वरक प्रबंधन के लिए खड़ी फसल में यूरिया का छिड़काव 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से पहली सिंचाई के बाद ओट आने के बाद सायं कॉल करें। फसल सुरक्षा के लिए यदि मक्का में तना छेदक /शिरा बेधक कीट लगा हुआ है तो इसके नियंत्रण के लिए 25 ई.सी. 1 लीटर डाईमैथओट या क्योंनालफास् 25 ई.सी. डेढ़ लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 400 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें यदि यह दवा बाजार में उपलब्ध न हो तो कार्बोफयूरान 3 प्रतिशत की 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव कर दें । पत्तियों या पौधों पर किसी प्रकार का कोई रोग दिखाई पड़े तो जीनेव या मैनकोज़ेब 75 प्रतिशत 2 किलोग्राम 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव कर दें। कीट या रोग फसल में पुनः दिखने पर 15 दिन के बाद छिड़काव कर दें। डॉक्टर मनोज मिश्रा ने कहा कि मक्का की फसल में जीरा या भुट्टा बनते समय मृदा में नमी का ध्यान जरूर रखा जाए उन्होंने कहा कि आमदनी बढ़ाने के लिए मक्का की दो लाइनों के बीच में लोबिया की बुवाई कर दें जिससे कीट पतंगों का प्रकोप कम होता है। तथा किसान भाइयों को अतिरिक्त आमदनी प्राप्त हो जाती है इसके अतिरिक्त उन्होंने कहा कि किसान भाई इन सब बातों का ध्यान रखकर मक्का का प्रबंधन करते हैं तो अच्छी आय प्राप्त होगी। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि कृषि कार्य करते समय कोविड-19 को दृष्टिगत सावधानी अवश्य रखें।

आज 24/04/2023 महा

जायद मक्का की फसल का प्रबंधन आवश्यक

कीट लगने पर दवा का छिड़काव करें किसान

कानपुर, 23 अप्रैल। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ.बिजेंद्र सिंह के जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्र ने कहा कि जायद की फसलों में मक्का का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में जायद मक्का का क्षेत्रफल लगभग 45000 हेक्टेयर है एवं कानपुर मंडल में मक्का का क्षेत्रफल लगभग 7500 हेक्टेयर है। डॉ मिश्रा ने कहा कि अधिकतर किसान भाई जायद मक्का की बुवाई भुट्टे के लिए करते हैं जिसे बाजार में बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त करते हैं।उन्होंने कहा है कि जायद मक्का का प्रबंधन यदि अच्छी प्रकार किया जाए तो एक हेक्टेयर क्षेत्रफल से लगभग 60 से 70 कुंतल दाना तथा 220 से 230 कुंतल हरा भुट्टा प्राप्त किया जा सकता है। तथा इतना ही हरा चारा पशुओं के लिए मिल जाता है। जिससे गर्मियों में हरा चारा की कमी को पूरा किया जा सकता है ।फसल प्रबंधन के क्रम में उन्होंने बताया कि मक्का की बुवाई के 15 से 20 दिनों के बाद पहली सिंचाई अवश्य कर दें। तत्पश्चात अगली सिंचाई आवश्यकता अनुसार 10 से 15 दिन के अंतराल पर करते रहें। जायद मक्का में खरपतवारो के नियंत्रण के लिए खुरपी की सहायता से निराई कर दें।जिससे खरपतवार प्रबंधन हो जाता है तथा मिट्टी में स्वसन क्रिया बढ़ने से पौधे स्वस्थ हो जाते हैं उन्होंने यह भी कहा कि उर्वरक प्रबंधन के लिए खड़ी फसल में यूरिया का छिड़काव 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से पहली सिंचाई के बाद ओट आने के बाद सायं कॉल करें। फसल सुरक्षा के लिए यदि मक्का में तना छेदक /शिरा बेधक कीट लगा हुआ है तो इसके नियंत्रण के लिए 25 ई.सी. 1 लीटर डाईमैथओट या क्योंनालफास् 25 ई.सी. डेढ़ लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 400 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें यदि यह दवा बाजार में उपलब्ध न हो तो कार्बोफयूरान 3 प्रतिशत की 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव कर दें । पत्तियों या पौधों पर किसी प्रकार का कोई रोग दिखाई पड़े तो जीनेव या मैनकोज़ेब 75 प्रतिशत 2 किलोग्राम 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव कर दें। कीट या रोग फसल में पुनः दिखने पर 15 दिन के बाद छिड़काव कर दें। डा. मनोज मिश्रा ने कहा कि मक्का की फसल में जीरा या भुट्टा बनते समय मृदा में नमी का ध्यान जरूर रखा जाए उन्होंने कहा कि आमदनी बढ़ाने के लिए मक्का की दो लाइनों के बीच में लोबिया की बुवाई कर दें जिससे कीट पतंगों का प्रकोप कम होता है। तथा किसान भाइयों को अतिरिक्त आमदनी प्राप्त हो जाती है इसके अतिरिक्त उन्होंने कहा कि किसान भाई इन सब बातों का ध्यान रखकर मक्का का प्रबंधन करते हैं तो अच्छी आय प्राप्त होगी। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि कृषि कार्य करते समय कोविड 19 को दृष्टिगत सावधानी अवश्य रखें।

जायद मक्का की बुवाई से बढ़ती है किसानों की आमदनी

डॉ.मनोज मिश्रा।

राष्ट्रीय
सहारा

कानपुर • सोमवार • 24 अप्रैल • 2023

सही प्रबंधन से एक हेक्टेयर में मिल सकती है 230 कुंतल भुट्टे की उपज

पुर (एसएनबी)। चंद्रशेखर आजाद एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के ति डॉ. विजेंद्र सिंह के निर्देश पर विवि के क निदेशक शोध डॉ. मनोज मिश्र ने इजरी जारी कर कहा है कि जायद की नों में मक्का का महत्वपूर्ण स्थान है। उत्तर में जायद मक्का का क्षेत्रफल लगभग 00 हेक्टेयर है एवं कानपुर मंडल में मक्का क्षेत्रफल लगभग 7500 हेक्टेयर है। कतर किसान जायद मक्का की वुवाई भुट्टों ए करते हैं, जिसे वाजार में वेचकर अच्छी दनी प्राप्त करते हैं। उन्होंने कहा है कि द मक्का का प्रवंधन यदि अच्छी प्रकार ा जाए तो एक यर क्षेत्रफल से ग 60 से 70 न दाना तथा 220 230 कुंतल हरा प्राप्त किया जा सकता है। इतना ही हरा पशुओं के लिए मिल जाता है, जिससे ों में हरा चारा की कमी को पूरा किया जा ा है ।

जायद मक्का फसल प्रबंधन के लिये सीएसए विशेषज्ञों की एडवाइजरी जारी

फसल प्रवंधन के क्रम में उन्होंने वताया क्का की वुवाई के 15 से 20 दिनों के वाद ो सिंचाई अवश्य कर दें। तत्पश्चात् अगली ई आवश्यकता अनुसार 10 से 15 दिन के ाल पर करते रहें। जायद मक्का में तवारों के नियंत्रण के लिए खरपी की यूरिया का छिड़काव 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से पहली सिंचाई के वाद ओट आने के वाद सायं काल करें। फसल सुरक्षा के लिए यदि मक्का में तना छेदक शिरा वेधक कीट लगा हुआ है तो इसके नियंत्रण के लिए 25 ई.सी. 1 लीटर डाईमैथओट या क्योंनालफास् 25 ई.सी. डेढ़ लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 400 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। यदि यह दवा वाजार में उपलब्ध न हो तो कार्वोफयूरान 3 की 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से वुरकाव कर दें। पत्तियों या पौधों पर किसी प्रकार का कोई रोग दिखाई पड़े तो जीनेव या मैनकोजेव 75: 2 किलोग्राम 500 लीटर पानी में घोल वनाकर छिड़काव कर दें। कीट या रोग फसल में पुनः दिखने पर 15 दिन के वाद छिड़काव कर दें।

डॉ. मिश्रा ने कहा कि मक्का की फसल में जीरा या भुट्टा वनते समय मृदा में नमी का ध्यान जरूर रखा जाए। उन्होंने कहा कि आमदनी वढ़ाने के लिए मक्का की दो लाइनों के वीच में लोविया की वुवाई कर दें, जिससे कीट पतंगों का प्रकोप कम होता है तथा किसान भाइयों को अतिरिक्त आमदनी प्राप्त हो जाती है। इसके अतिरिक्त उन्होंने कहा कि किसान भाई इन सव वातों का ध्यान रखकर मक्का का प्रवंधन

उत्तर प्रदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

आज शामली में रहेंगे सीएम योगी, तैयारियों... 10

उ.प्र. राज्य लोक सेवा आयोग के 24वें राष्ट्रीय... 05

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्षः 14 | अंकः 190
मूल्यः ₹ 3.00/- पेज : 12
सोमवार | 24 अप्रैल, 2023

किसानों को मक्का की फसल को कीटों से बचाने के लिए कृषि वैज्ञानिकों ने बताए उपाय

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक शोध डॉ. मनोज मिश्र ने बीते दिन रविवार को जायद की फसलों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जायद की फसलों में मक्का का महत्वपूर्ण स्थान है। इससे प्राप्त होने वाले हरे चारे से गर्मियों में पशुओं के लिए हरे चारे की कमी को भी पूरा किया जा सकता है। फसल प्रबंधन के बारे में बात करते हुए उन्होंने बताया कि मक्का की बुवाई 15 से 20 दिनों के बाद पहली सिंचाई अवश्य करे। व अगली सिंचाई आवश्यकता अनुसार 10 से 15 दिन के अंतराल पर करते रहें। उन्होंने बताया कि उर्वरक प्रबंधन के लिए खड़ी फसल में यूरिया का छिड़काव 20 किलोग्राम प्रति हक्टेयर की दर से पहली सिंचाई के बाद ओट आने के बाद सायं कॉल करें। मक्का में तना छेदक /शिरा बेधक कीट लगा होने पर इसके नियंत्रण के लिए 25 ई.सी. 1 लीटर डाईमैथओटक्या क्योंनालफास् 25 ई.सी. डेढ़ लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 400 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।

उन्होंने बताया कि बाजार में इस दवा के न होने पर कार्बोफयूरान 3फीसद की 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव कर सकते हैं। उन्होंने मक्का की फसल में जीरा या भुट्टा बनते समय मृदा में नमी का ध्यान रखने की सलाह दी। डॉ. मिश्र ने बताया कि उत्तर प्रदेश में जायद मक्का का क्षेत्रफल लगभग 45000 हेक्टेयर है एवं कानपुर मंडल में मक्का का क्षेत्रफल लगभग 7500 हेक्टेयर है। उन्होंने बताया कि जायद मक्का का प्रबंधन अच्छी प्रकार से कर किसान एक हेक्टेयर क्षेत्रफल से लगभग 60 से 70 कुंतल दाना तथा 220 से 230 कुंटल हरा भुट्टा प्राप्त कर सकते है।

अमर भारती
एक उम्मीद
करण
य: 03 रु. RNI No. UPHIN/2011/46455 www.amarbharti.com सोमवार 24 अप्रैल 2023 शक सम्वत 1945

जायद फसलों में मक्का का महत्वपूर्ण स्थानः कुलपति

अमर भारती ब्यूरो

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉ.बिजेंद्र सिंह के जारी निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्र ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा है कि जायद की फसलों में मक्का का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में जायद मक्का का क्षेत्रफल लगभग 45000 हेक्टेयर है एवं कानपुर मंडल में मक्का का क्षेत्रफल लगभग 7500 हेक्टेयर है। डॉक्टर मिश्रा ने कहा कि अधिकतर किसान भाई जायद मक्का की बुवाई भुट्टो के लिए करते हैं जिसे बाजार में बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त करते हैं।उन्होंने कहा है कि जायद मक्का का प्रबंधन यदि अच्छी प्रकार किया जाए तो एक हेक्टेयर क्षेत्रफल से लगभग 60 से 70 कुंतल दाना तथा 220 से 230 कुंतल हरा भुट्टा प्राप्त किया जा सकता है। तथा इतना ही हरा चारा पशुओं के लिए मिल जाता है। जिससे गर्मियों में हरा चारा की कमी को पूरा किया जा सकता है ।फसल प्रबंधन के क्रम में उन्होंने बताया कि मक्का की बुवाई के 15 से 20 दिनों के बाद पहली सिंचाई अवश्य कर दें। तत्पश्चात अगली सिंचाई आवश्यकता अनुसार 10 से 15 दिन के अंतराल पर करते रहें। जायद मक्का में खरपतवारो के नियंत्रण के लिए खुरपी की सहायता से निराई कर दें।जिससे खरपतवार प्रबंधन हो जाता है तथा मिट्टी में स्वसन क्रिया बढ़ने से पौधे स्वस्थ हो जाते हैं उन्होंने यह भी कहा कि उर्वरक प्रबंधन के लिए खड़ी फसल में यूरिया का छिड़काव 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से पहली सिंचाई के बाद ओट आने के बाद सायं कॉल करें।

फसल सुरक्षा के लिए यदि मक्का में तना छेदक /शिरा बेधक कीट लगा हुआ है तो इसके नियंत्रण के लिए 25 ई.सी. 1 लीटर डाईमैथओट या क्योंनालफास् 25 ई.सी. डेढ़ लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 400 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें यदि यह दवा बाजार में उपलब्ध न हो तो कार्बोफयूरान 3त्न की 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव कर दें । पत्तियों या पौधों पर किसी प्रकार का कोई रोग दिखाई पड़े तो जीनेब या मैनकोज़ेब 75 2 किलोग्राम 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव कर दें।